The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

22. शमशेर बहादुर सिंह की कविता में प्रकृति

अतुल कुमार
इलाहाबाद विश्वविद्यालय (परास्नातक)
ई-मेल atulkumar963195@gmail.com
मो.7061239719

सार

शमशेर बहादुर सिंह हिंदी की नई कविता के प्रमुख कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं है, बल्कि मनुष्य, समाज और पर्यावरण के गहरे संबंधों का भी प्रतीक है। भारतीय साहित्य में प्रकृति का चित्रण प्राचीन काल से होता रहा है। आधुनिक युग में जब औद्योगीकरण, शहरीकरण और पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ीं, तब साहित्यकारों ने प्रकृति के संरक्षण और उसके महत्व को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया। शमशेर बहादुर सिंह की कविताएँ इसी संवेदनशील दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे प्रकृति को केवल बाहरी दृश्य नहीं, बल्कि मनुष्य के आंतरिक जीवन का विस्तार मानते हैं। शमशेर बहादुर सिंह के लिए प्रकृति जीवंत है। वे पेड़, पौधे, नदी, आकाश, बादल, वर्षा, धूप, चाँद, हवा और फूलों को केवल दृश्य तत्व नहीं मानते, बल्कि मानवीय संवेदनाओं से जोड़ते हैं। उनकी प्रकृति जीवन के सुख-दुःख, प्रेम, करुणा और आशा की अभिव्यक्ति बन जाती है। उनकी कविताओं में प्रकृति के सूक्ष्म रंगों और ध्वनियों का अत्यंत कलात्मक चित्रण मिलता है।

मुख्य शब्द- प्रकृति-बोध, नई कविता, प्रयोगवाद, सौंदर्य-बोध, मानवीय संवेदना, बिंब-विधान, चित्रात्मकता, पर्यावरण चेतना, आधुनिक हिन्दी कविता।

परिचय

शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी कविताओं में प्रकृति सौन्दर्य, संवेदना और मानवीय अनुभवों का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी प्रकृति-दृष्टि आधुनिक होते हुए भी भारतीय काव्य-परंपरा से जुड़ी हुई है। प्रकृति उनके लिए केवल बाह्य नहीं बल्कि आंतरिक है। उनकी कविताओं में प्रकृति का चित्रण चित्रकार की दृष्टि, संगीतकार की लय और दार्शनिकता की गहराई के साथ उपस्थित होता है। शमशेर प्रयोगात्मक दृष्टि से प्रकृति में नई अनुभूति रचने का प्रयास करते हैं। मानव मन की रागात्मक और सामाजिक चेतना को भी कवि ने प्रकृति परिवेश के साथ जोड़कार प्रस्तुत किया है। उनकी 'ये शाम है' कविता इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। कवि लिखते है-

"ये शाम है
कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का।
लपक उठी लहू-भरी दराँतियाँ

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

कि आग है।"[1]

कवि यहाँ प्रकृति-वर्णन में केवल संध्या का दृश्य प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसमें जीवन, श्रम और परिवर्तन की गहन अनुभूति भी समाहित करने का प्रयास करते है। आकाश को पके हुए खेत तथा सूर्यास्त की लालिमा को रक्तरंजित दराँतियों के रूप में चित्रित करके उन्होंने प्रकृति को केवल सौंदर्य का विषय नहीं रहने दिया, बल्कि उसे श्रम, जीवन, संघर्ष और परिवर्तन का सशक्त प्रतीक बना दिया। कवि के सौंदर्यबोध के संदर्भ में विजयदेव नारायण साही लिखते है कि "शमशेर की सारी कविताएँ यदि शीर्षक-हीन छपें या उन सबका एक ही शीर्षक हो सौंदर्य शुद्ध सौंदर्य तो कोई नहीं पड़ेगा"।[2] वास्तव में शमशेर की सौंदर्यानुभूति बहुत व्यापक एवं गहन है। उनकी कविताओं में अभिव्यक्त सौंदर्य एक निजी वैयक्तिक अनुभूति है तथा सौंदर्यानुभव एक आनंदानुभाव है। यह सौंदर्यानुभूति मानव जीवन की एक सहजानुभूति है। शमशेर बहादुर सिंह की कविता में प्रकृति और मनुष्य के बीच कोई विभाजन नहीं है। जब कवि प्रसन्न होता है, तो प्रकृति भी उज्ज्वल, प्रकाशमान और जीवंत दिखाई देती है, जब वह विषाद से घिरा होता है, तो वही प्रकृति धुंध, कुहरे, उदासी और मौन का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार प्रकृति कवि की मानसिक अवस्थाओं का प्रतीक बन जाती है। शमशेर की कविता में प्रकृति का प्रत्येक तत्व- सूर्य, चन्द्रमा, बादल, वर्षा, हवा, वृक्ष, नदी, संध्या, उषा मानवीय भावनाओं का संवाहक है। यह विशेषता उन्हें आधुनिक हिन्दी कविता में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। यही कारण है कि शमशेर बहादुर सिंह को 'कवियों का कवि' और 'कवि से बड़े आदमी' कहा जाता है।

शमशेर बहादुर सिंह मुख्य रूप से प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। उनके प्रेम का आधार केवल मानवीय संबंध नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति आत्मीयता है। प्रकृति उनके प्रेम की सबसे बड़ी सहचरी है। उनकी कविताओं में चाँद प्रेम का प्रतीक बनता है। चाँदनी प्रिय के स्पर्श का अनुभव कराती है। वसंत प्रेम की नवीनता का संकेत देता है। वर्षा विरह और मिलन दोनों का प्रतीक बन जाती है। फूल सौंदर्य और कोमलता के द्योतक बनती हैं। कवि के शब्दों में-

"प्रेम का कँवल कितना विशाल हो जाता है
आकाश जितना
और केवल उसी के दूसरे अर्थ
सौंदर्य हो जाता है
मनुष्य की आत्मा में"।[3]

इस प्रकार प्रकृति प्रेम की अनुभूति को अधिक गहन और प्रभावशाली बना देती है। कमल और आकाश के प्राकृतिक बिंबों के माध्यम से कवि ने यह सिद्ध किया कर दिया है कि सच्चा प्रेम मनुष्य के हृदय को असीम बनाता है और

[1] प्रतिनिधि कविताएँ सं. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण1998, पृ. 41
[2] शमशेर : कवि से बडे आदमी, विजयदेव नारायण साही, सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, संस्करण 1999 , पृ. 83
[3] इतने पास अपने, शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2011, पृ. 44

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

उसी से उसकी आत्मा में वास्तविक सौंदर्य का जन्म होता है। यह शमशेर की प्रकृति-दृष्टि की सूक्ष्मता, प्रतीकात्मकता और दार्शनिकता की गहराई का उत्कृष्ट उदाहरण है। यदि शमशेर की कविता की सबसे बड़ी विशेषता बतानी हो, तो वह उनका सौंदर्यबोध है। वे प्रकृति को केवल देखकर उसका वर्णन नहीं करते, बल्कि उसकी आत्मा को अनुभव करते हैं। उनके लिए सौन्दर्य केवल बाहरी रूप में नहीं, बल्कि प्रकाश, रंग, ध्वनि, गति और अनुभूति में निहित है। कवि लिखते है

"मैंने
क्षितिज के बीचोंबीच खिला हुआ देखा
कितना बड़ा फूल।
अमर सौंदर्य का कोई इशारा-सा
एक तीर-
दिशाओं की चौकोर दुनिया के बराबर
संतुलित
संधा हुआ
निशाने पर
छूटने छूटने को था"।[4]

इस कविता में शमशेर ने उगते हुए सूर्य को 'क्षितिज के बीचोंबीच खिले हुए विशाल फूल' के रूप में देखते है। यह उनकी प्रकृति-संवेदना, चित्रात्मकता और प्रतीकात्मक शैली की विशिष्ठता है, जहाँ सूर्योदय केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि सौंदर्य, सृजन और नई चेतना का प्रतीक है।

शमशेर बहादुर सिंह की कविता किसी एक वाद, आंदोलन या साहित्यिक धारा की सीमाओं में बँधकर नहीं रहती। उन्हें केवल प्रयोगवादी, प्रगतिवादी, नई कविता के कवि या शुद्ध कविता के कवि कहना उनके व्यापक काव्य-संसार को सीमित कर देना होगा। नामवर सिंह शमशेर बहादुर सिंह के लिए लिखते है- "इसलिए शमशेर के लिए इतना ही काफी है कि वे कवि हैं- सिर्फ कवि। न 'शुद्ध कविता' का कवि, न 'कवियों का कवि', न प्रयोग का कवि और न प्रगति का ही कवि। कुछ कवि ऐसे होते हैं जिन्हें हर विशेषण छोटा कर देता है"।[5] वासत्व में शमशेर को किसी एक साहित्यिक खाँचे में नहीं रखा जा सकता, वे अपनी व्यापक'संवेदना, कलात्मकता और मानवीय दृष्टि के कारण 'सिर्फ कवि' हैं, और यही उनकी सबसे बड़ी पहचान है।

'एक पीली शाम' कविता में शमशेर लिखते हैं-

[4] कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ - शमशेर बहादुर सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन संस्करण 1994 , पृ. 70

[5] प्रतिनिधि कविताएँ सं. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण1998, पृ. 41

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

'एक पीली शाम
पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता
अब गिरा
अब गिरा
वह अटका हुआ आँसू सांध्य तारक-सा
अतल में"।[6]

शमशेर बहादुर सिंह के लिए प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि मानवीय दुःख, जीवन की क्षणभंगुरता और अस्तित्वगत संवेदना का माध्यम है। पीली शाम, पतझर का पत्ता, अटका हुआ आँसू और सांध्य तारा ये सभी प्राकृतिक बिंब मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जिसमें प्रकृति और मनुष्य एकाकार हो जाती है। यही शमशेर की प्रकृति-कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

इस प्रकार शमशेर ने अपनी कविताओं में उषा, संध्या, चाँद, चाँदनी, बादल, वर्षा, पतझर, फूल, आकाश, हवा और ऋतुओं जैसे प्राकृतिक उपादानों को अत्यंत चित्रात्मक, प्रतीकात्मक और संगीतमय ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी चित्रकार की चेतना के कारण प्रकृति के रंग, प्रकाश और छाया कविता में सजीव चित्रों के रूप में उभरते हैं। साथ ही, उनकी भाषा की लयात्मकता और बिंब-योजना प्रकृति को केवल दृश्य नहीं रहने देती, बल्कि उसे अनुभूति का रूप प्रदान करती है।

शमशेर की प्रकृति-कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें सौंदर्य और संवेदना, प्रकृति और मनुष्य, बाह्य और आंतरिक अनुभव का अद्भुत समन्वय मिलता है। उनकी कविताओं में प्रकृति मनुष्य के अस्तित्व, उसकी संस्कृति और उसकी आत्मा का अभिन्न अंग है। इसलिए प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरणीय दायित्व नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना की भी आवश्यकता है।

निष्कर्ष

शमशेर बहादुर सिंह की कविता में प्रकृति केवल दृश्य-सौंदर्य का विषय नहीं है, बल्कि मानवीय संवेदना, प्रेम, सौंदर्य-बोध, सामाजिक यथार्थ और दार्शनिक चिंतन का सशक्त माध्यम है। उनकी प्रकृति-दृष्टि भारतीय काव्य-परंपरा से जुड़ी होने के साथ-साथ आधुनिक चेतना से भी संपृक्त है। उन्होंने प्रकृति के विविध उपादानों—आकाश, चाँद, चाँदनी, बादल, वर्षा, उषा, संध्या, वृक्ष, फूल और ऋतुओं—को केवल वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें मानवीय भावनाओं और जीवनानुभवों का प्रतीक बनाया है।

शमशेर की कविता में प्रकृति और मनुष्य का संबंध अत्यंत आत्मीय तथा अभिन्न है। उनके यहाँ प्रकृति कवि के अंतर्मन की भाव-स्थितियों का विस्तार बनकर सामने आती है। आनंद, प्रेम, करुणा, विरह, आशा, संघर्ष और जीवन की क्षणभंगुरता—इन सभी भावों को प्रकृति के माध्यम से अत्यंत कलात्मक और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति मिली है।

[6] वही पृष्ठ-101

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

उनकी चित्रकार-सुलभ दृष्टि, बिंब-योजना, रंग-संवेदना और संगीतात्मक भाषा प्रकृति को सजीव एवं बहुआयामी रूप प्रदान करती है।

आधुनिक समय में जब पर्यावरणीय संकट और मानवीय संवेदनहीनता बढ़ती जा रही है, तब शमशेर की प्रकृति-कविता हमें प्रकृति के साथ संतुलित, संवेदनशील और आत्मीय संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती है। उनकी कविताएँ यह संदेश देती हैं कि प्रकृति का संरक्षण केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि मानवीय संस्कृति, सौंदर्य-बोध और जीवन-मूल्यों की रक्षा का भी अनिवार्य आधार है।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रकृति को आधुनिक हिन्दी कविता में एक नवीन, गहन और व्यापक अर्थ प्रदान किया है। उनकी प्रकृति-कविता सौंदर्य, संवेदना और मानवीय चेतना का अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत करती है, जिसके कारण उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में सदैव प्रासंगिक बना रहेगा।

संदर्भ सूची

1. नगेन्द्र. (2012). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स।
2. नामवर सिंह. (2015). *कविता के नये प्रतिमान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. नामवर सिंह. (2016). *दूसरी परम्परा की खोज*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. शमशेर बहादुर सिंह. (2011). *कुछ कविताएँ*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. शमशेर बहादुर सिंह. (2013). *चुका भी हूँ नहीं मैं*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शमशेर बहादुर सिंह. (2014). *इतने पास अपने*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. साही, विजयदेव नारायण. (2010). *विजयदेव नारायण साही रचनावली* (खण्ड–2). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. वर्मा, रामस्वरूप चतुर्वेदी. (2011). *हिन्दी नवलेखन*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
9. शर्मा, रामविलास. (2013). *आस्था और सौन्दर्य*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. मिश्र, विद्यानिवास. (2012). *साहित्य का प्रयोजन*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
11. बच्चन सिंह. (2014). *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास*. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
12. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. (2015). *समकालीन हिन्दी कविता*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
13. पाण्डेय, मैनेजर. (2014). *साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
14. द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद. (2011). *साहित्य सहचर*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
15. शुक्ल, रामचन्द्र. (2016). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।

The Asian Thinker